M.A. Semester - II
Philosophy C.C. 08
Unit — II

Prof. Ragini Kumari
Prof. & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

शंकर का ब्रह्म सम्बन्धी सिद्धान्त

(भाग-II)

शंकर का ब्रह्म सत्य होने के नाते सभी प्रकार के विरोधों से मुक्त है। सत्य उसे कहते हैं, जिसका कभी बाध्य नहीं होता है शंकर ने दो प्रकार के विरोध की चर्चा की है

(1) प्रत्यक्ष विरोध और
(2) सम्भावित विरोध।

जब एक वास्तविक प्रतीति दूसरी वास्तविक प्रतीति से खण्डित हो जाती है तब उसे प्रत्यक्ष विरोध कहा जाता है। साँप के रूप में जिसकी प्रतीति हो रही है उसी का रस्सी के रूप में प्रतीत होना इसका उदाहरण है।

सम्भावित विरोध वह है जो युक्ति के द्वारा बाधित होता है। शंकर का ब्रह्म प्रत्यक्ष विरोध एवं सम्भावित विरोध से शून्य है। ब्रह्म त्रिकाल बाधित सत्ता है।

शंकर ने ब्रह्म को व्यक्तित्व से शून्य कहा है। व्यक्तित्व में आत्मा और अनात्मा का भेद रहता है। ब्रह्म सब भेदों से शून्य है इसलिए ब्रह्म को निर्व्यक्तिक कहा गया है। यहीं पर शंकर का ब्रह्म विचार रामानुज के ब्रह्म विचार से भिन्न

है क्योंकि रामानुज ने ब्रह्म में व्यक्तित्व को माना है।

शंकर ने ब्रह्म को अनन्त असीम कहा है। वह सर्वव्यापक है। उसका आदि और अन्त नहीं है। वह सब का कारण होने के कारण सब का आधार है। पूर्ण और अनन्त होने के कारण आनन्द ब्रह्म का स्वरूप है।

ब्रह्म अपरिवर्तनशील है। इसका न विकास होता है न रूपान्तर होता है। वह निरन्तर एक समान रहता है।

(It does not unfold express develop manifest grow and change for it is self-identical through out.

(Indian Phil. Vol. II P 587 By Radhakrishnan)

शंकर के ब्रह्म की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि उन्होंने ब्रह्म को अनिर्वचनीय माना है। हम यह नहीं कह सकते कि ब्रह्म क्या है? अपितु हम यह जान पाते हैं कि "ब्रह्म क्या नहीं है"। शंकर उपनिषद् के नेति-नेति विचार के आधार पर ही ब्रह्म की व्याख्या करता है। नेति-नेति का शंकर के दर्शन में इतना प्रभाव है कि वह ब्रह्म को एक कहने के बजाय अद्वैत कहता है। ब्रह्म की व्याख्या निषेधात्मक रूप से की जाती है। ब्रह्म अनिर्वचनीय है से तात्पर्य यह नहीं कि वह अज्ञेय है, बल्कि ब्रह्म की अनुभूति होती है। इसप्रकार ब्रह्म निर्गुण निर्विशेष और निराकार है सत् और असत् एक और अनेक ..... ज्ञान और अज्ञान कर्म और अकर्म, क्रियाशील और अक्रियाशील, फलदायक और फलहीन ----- इत्यादि

प्रत्यय ब्रह्म पर लागू नहीं हो सकते।

शंकर ने ब्रह्म की भावात्मक ढंग से भी व्याख्या किया है तथा इस सन्दर्भ में ब्रह्म को सच्चिदानन्द, सत + चित + आनन्द कहा है। सत चित और आनन्द में अपियोज्य सम्बन्ध है जिसके फलस्वरूप तीनों मिलकर एक ही सत्ता का निर्माण करते हैं। हालांकि शंकर ब्रह्म का अपने भावात्मक व्याख्या से उतना संतुष्ट नहीं, जितना वे अपने अभावात्मक व्याख्या को महत्व देते हैं।